

---

# Trailokyamohana Shri Sita Kavacham

---

## त्रैलोक्यमोहनश्रीसीताकवचम्

---

### Document Information

Text title : Trailokyamohana Sita kavacham

File name : trailokyamohanasItAkavacham.itx

Category : devii, sItA, devI, kavacha

Location : doc\_devii

Transliterated by : Mrityunjay Pandey

Proofread by : Mrityunjay Pandey

Latest update : December 30, 2023

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

December 30, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

त्रैलोक्यमोहनश्रीसीताकवचम्



श्रीलक्ष्मण उवाच ।

कृताञ्जलिपुटो भूत्वा नत्वा शिरसि लक्ष्मणः ।

उवाच परमं दिव्यं सीतायाः कवचं परम् ॥ १ ॥

त्वत्तः श्रोतुमिच्छामि त्रैलोक्यमोहनं महत् ।

कथयस्व रघुश्रेष्ठ दिव्यं कवचमुत्तमम् ॥ २ ॥

श्रीराम उवाच शृणु वत्स महादिव्यं महामङ्गलदायकम् ।

महासिद्धिकरं पुंसां महासम्पत्तिदायकम् ॥ ३ ॥

त्रैलोक्यमोहनं नाम कवचं परमाद्भुतम् ।

यः पठेत्सततं भक्त्या अपुत्रः पुत्रवान् भवेत् ॥ ४ ॥

अष्टाक्षरं महामन्त्रं पठेत् कवचसंयुतम् ।

ततः सिद्धिमवाप्नोति अकीलमतुलं वरम् ॥ ५ ॥

ॐ अस्य श्रीसीतात्रैलोक्यमोहनकवचमन्त्रस्य श्रीरामऋषिरनुष्टुप्

छन्दः श्रीसीतादेवता श्रीसीताप्रीत्यर्थं जपे (पाठे) विनियोगः ॥

ध्यानम् -

नीलाम्भोजदलाभिरामनयनां नीलाम्बरालङ्कृतां

गौराङ्गीं शरदिन्दुसुन्दरमुखीं विस्मेरबिम्बाधराम् ।

कारुण्यामृतवर्षिणीं हरिहरब्रह्मादिभिर्वन्दितां

ध्यायेद्भक्तजनेप्सितार्थफलदां रामप्रियां जानकीम् ॥ १ ॥

ॐ शिरो मे भूभवा पातु ललाटे जनकात्मजा ।

नेत्रे पातु कुजा चैव वैदेही श्रुतिरक्षिणी ॥ २ ॥

जिह्वां मे जानकी पातु ग्रीवां जनकनन्दिनी ।

स्कन्धौ पातु महामाया भुजौ पातु सुलोचना ॥ ३ ॥

करौ पातु सदा सीता हृदयं रामपार्श्वगा ।  
मध्यं पातु च पद्माक्षी नाभिं मे वनवासिनी ॥ ४ ॥  
कटिं योगेश्वरी पातु सक्थिनीं मृगध्वंसिनी ।  
उरू मे पातु वैदेही जानुनी भिल्लमोक्षिणी ॥ ५ ॥  
जङ्घे बालिप्रमाथिनी चतुष्पदी दैत्यनाशिनी ।  
सर्वाङ्गं पातु स्वच्छाङ्गी सदा पातु प्रबोधिनी ॥ ६ ॥  
विभीषणश्रीदा पातु सद्यश्चैव दिशो दश ।  
सीतायाः कवचं ह्येतद्देवानामपि दुर्लभम् ॥ ७ ॥  
त्रैलोक्यमोहनं नाम त्रैलोक्यधनदायकम् ।  
मुच्यते सर्वपापेभ्यो निर्वाणमधिगच्छति ॥ ८ ॥  
अश्वमेधायुतफलं पठनाल्लभते नरः ।  
नित्यं पठति भक्त्या यः तस्य सीता प्रसीदति ॥ ९ ॥  
राज्यलाभो भवेत्तस्य मम भक्तिश्च पुष्कला ।  
यः पठेत्तु ममाग्रे वै पूजाकाले प्रयत्नतः ।  
सौमित्रे च श्रृणुष्व त्वं ददामि वाञ्छितं फलम् ॥ १० ॥  
इति त्रैलोक्यमोहनश्रीसीताकवचं सम्पूर्णम् ॥

Encoded and proofread by Mrityunjay Pandey

---

Trailokyamohana Shri Sita Kavacham  
pdf was typeset on December 30, 2023

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

